गंगा मईया की जान ;
अपने देश की शान
घड़ियाल

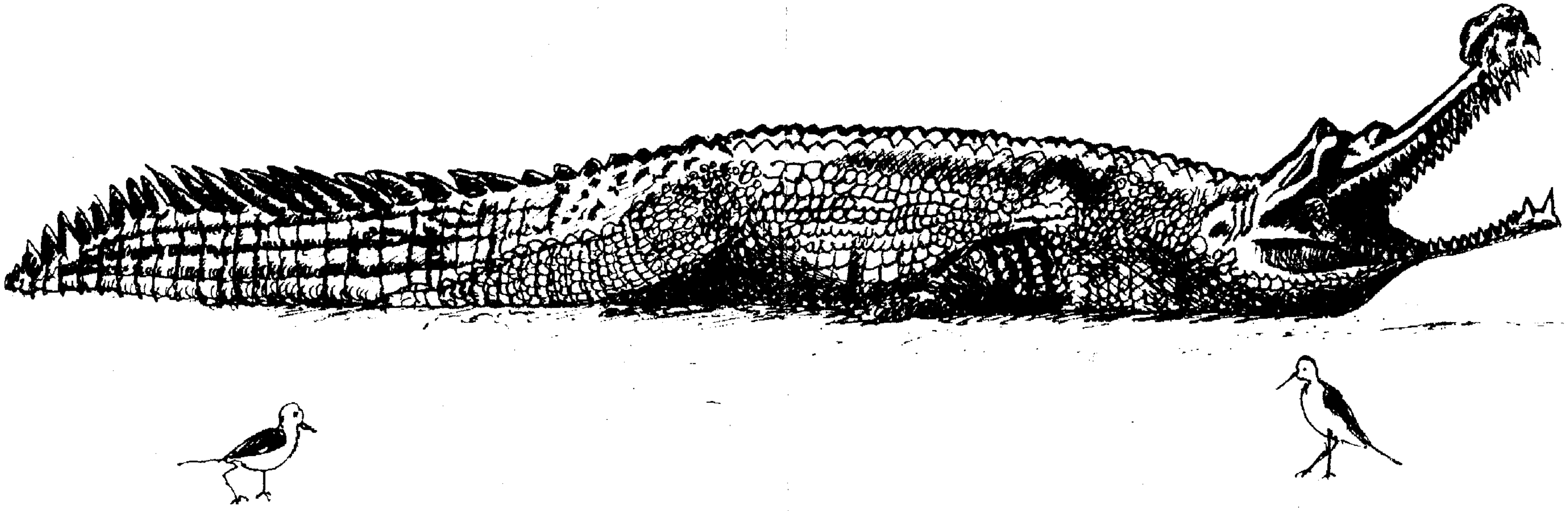

सौजन्य : मद्रास क्रोकोडाइल बैंक

निर्माण : आइबेक्स एडवर्टाइजिंग, लखनऊ

ॐ

गंगा मईया की जान ; अपने देश की शान – घड़ियाल

श्रीकृष्ण भगवान कुरूक्षेत्र की रणभूमि पर पाण्डव महायोद्धा अर्जुन के लिए श्रीमदभगवत गीता के दिव्यज्ञान की वाचना करते समय कहते हैं कि, विश्व में हर श्रेष्ठ वस्तु या जीव में परमात्मा विराजमान है।

"पवन पवतामस्मि रामः शस्त्रभृतामहम् ।
झषणां मकराश्चास्मि स्त्रोतसामस्मि जाह्नवी ।।" (अध्याय 10:31)

अर्थात

"मैं पवित्र करने वालों में वायु, और शस्त्रधारियों में श्रीराम हूँ।
जलचरों में घड़ियाल हूँ और नदियों में मैं श्रीभागीरथी गंगा हूँ।।"

वास्तव में, घड़ियाल जलचरों में श्रेष्ठ एवं का परमात्मा स्वरूप ही है। पृथ्वी पर पाये जाने वाले अन्य 23 प्रकारों के मगरमच्छों के विपरीत, विशालकाय घड़ियाल, एकमात्र अनोखा 'मटुकधारी' मगर प्रजाति है। और चमत्कार की बात है कि यह केवल हमारे देश के श्रीभागीरथी गंगाजी नदी तंत्र मे ही पाया जाता है।

आज से लगभग 100 वर्ष पहले, गंगाजी एवं घाघरा / चम्बल जैसी इनकी सहायक नदियों में, घड़ियाल हजारों बल्कि लाखों की संख्या में पाये जाते थे। मनुष्य द्वारा इनकी प्रत्यक्ष हत्या एवं अप्रत्यक्ष उत्पीणन ने इस जन्तु को विलुप्ति के कगार पर ढकेल दिया था। वर्ष 1970 के आस-पास सभी नदियों में ढूँढ़ने के बाद, मात्र दो-सौ से भी कम जीवित घड़ियालों का पता लगाया जा सका। तब से, 30 वर्ष के संरक्षण एवं पुनर्वास के प्रयासों के फलस्वरूप, घड़ियालों की संख्या बढ़कर धीरे-धीरे लगभग 1500 हो गई। परन्तु यह स्थिति बिगड़ने के कारण, पिछले पाँच वर्षों में इनकी संख्या पुनः घटकर 700-800 हो गई हैं, अर्थात इस अद्भुत जीव का अस्तित्व अभी भी घोर खतरे में है।

क्या इतिहास हमें श्रीभागीरथी गंगाजी का वाहन, श्रेष्ठ जलचर के संहारक के रूप में ही याद रखेगा। घड़ियाल हमारे देश की शान है, हमारी नदियों की जान है। घड़ियाल प्रकृति का प्रतीक एवं परमात्मा का स्वरूप है; इसका संरक्षण हमारा परम कर्तव्य भी है। आप इस नेक काम में कैसे योगदान दें ?

यदि आप :

एक आम नागरिक हैं - आप घड़ियाल एवं प्रकृति संरक्षण में रूचि लें।

एक प्रशासक हैं - आप अपने प्रशासनिक क्षेत्र के विकास में पर्यावरण एवं वन्य जीव संरक्षण को महत्व दें।

एक धार्मिक नेता हैं - आप अपने भक्तगणों में घड़ियाल एवं प्रकृति संरक्षण के बारे में जागरूकता बढ़ायें।

एक अध्यापक हैं - आप अपने विद्यार्थियों में घड़ियाल एवं प्रकृति संरक्षण के बारे में जागरूकता बढ़ायें।

एक विद्यार्थी हैं - आप अपने मित्रों एवं माता -पिता में घड़ियाल एवं प्रकृति संरक्षण के बारे में जागरूकता बढ़ायें।

माता-पिता हैं - आप अपने बच्चे एवं मित्रों में घड़ियाल एवं प्रकृति संरक्षण के बारे में जागरूकता बढ़ायें।

एक किसान हैं - कीटनाशक दवाओं का उचित एवं वैज्ञानिक विधि से ही उपयोग करें।

एक मछुआरे हैं - मछली के शिकार के नियमों का पालन करें; अपने जाल में अकस्मात फँसे घड़ियाल को मुक्त कर उसे जीवन दान देने का प्रयास करें।

घड़ियाल एवं प्रकृति संरक्षण एक पुण्य का काम ही नहीं ; अपने अस्तित्व के लिए भी आवश्यक है।

सौजन्य : मद्रास क्रोकोडाइल बैंक